ISSN 2278-8808 SJIF 2013 = 4.194
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

औद्योगीकरण का ग्रामीण जीवन-शैली पर प्रभाव

शैलेन्द्र कुमार वर्मा , Ph.D. सहायक प्रध्यापक (संविदा), मानवविज्ञान अध्ययनशाला, पं.र.शु.वि.,रायपुर.

Abstract

जब भी समाज में किसी नियोजन के साथ कोई प्रक्रिया चलाई जाती है तो उसका उद्देश्य समाज में सकारात्मक परिवर्तन या विकास होता है। इन्हीं प्रक्रियाओं में औद्योगीकरण भी एक प्रमुख प्रक्रिया है। एक ओर जहाँ औद्योगीकरण देश के विकास विशेषकर आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है वहीं औद्योगीकरण अनेक प्रकार से पर्यावरणीय और सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याएँ भी उत्पन्न होती है। चूँकि वर्तमान समय में औद्योगीकरण को रोका नहीं जा सकता है परंतु विभिन्न प्रकार के शोध के द्वारा औद्योगीकरण के नकारात्मक प्रभावों को रोका या कम अवश्य किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध-पत्र भी भिलाई इस्पात संयंत्र के आसपास के गाँव में औद्योगीकरण के सकारात्मक-नकारात्मक प्रभाव को देखने के लिए किया गया है। विशेषकर यह अध्ययन भिलाई इस्पात संयंत्र के आसपास के गाँव में किशोर-किशोरियों पर संपन्न किया गया है। औद्योगीकरण के सकारात्मक-नकारात्मक प्रभाव से संबंधित इस अध्ययन में औद्योगीकरण के कई ऐसे नकारात्मक प्रभाव प्राप्त हुए जो अध्ययन क्षेत्र के किशोर-किशोरियों के भविष्य के लिए काफी संवेदनशील और गंभीर हैं। जैसे, अध्ययन क्षेत्र अतः भिलाई इस्पात संयंत्र के आसपास के गाँव में जब भी किशोर-किशोरियाँ अपने पढ़ाई लिखाई में कमजोर होती हैं तो या जब वे अपनी पढ़ाई त्याग देतें है तो उन बच्चों के परिवार वाले उन बच्चों को भिलाई इस्पात संयंत्र में ठेकेदारी में काम करने के लिए भेज देते हैं। इन सभी का प्रभाव का मुख्य रुप से १८ वर्ष से कम उम्र के बच्चों पड़ता है। जिससे बाल-श्रम और उससे संबंधित समस्याएँ उत्पन्न होती है। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी प्रकार की कुछ समस्याओं को क्षेत्रकार्य के द्वारा एकत्रित की गई तथ्यों के आधार पर दर्शाने का प्रयास है।

कुंजी शब्द *: औद्योगीकरण, औद्योगीकरण के प्रभाव, बाल-श्रम।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com
4.194, 2013 SJIF© SRJIS 2014

१. भूमिका :- वर्तमान समय में भारत के अंतर्गत बसने वाले तीन भारत अर्थात् जनजातीय भारत, ग्रामीण भारत एवं शहरी भारत तीनों क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना एवं उसके विकास की प्रक्रिया तेजी से चल रही है। इस संबंध में कोई भी दो राय नहीं है कि औद्योगीकरण किसी भी देश के विकास के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है विशेषकर भारत जैसे विकासशील देश में उद्योगों की अपनी विशेष आवश्यकता है। औद्योगीकरण के संबंध में दिए गए विभिन्न परिभाषाओं में राष्ट्र-संघ के परिभाषा पर गौर किया जाए तो ''औद्योगीकरण की प्रक्रिया केवल निर्माण उद्योगों तक ही सीमित नहीं है अपितु इसके द्वारा किसी भी देश के संपूर्ण आर्थिक संरचना परिवर्तित की जा सकती है।'' ;स्मंहनम वि छंजपवदे प्दकनेजतपंसप्रंजपवद ंदक थ्वतपहद ज्तंकमए च३०ए१९६५द्ध। औद्योगीकरण संबंधी कई महत्वपुर्ण बातें होती है जिसमें उधोग निर्भर करता है। जैसे, कर्मचारी प्रशिक्षण, औद्योगिक संघर्ष, श्रम-कल्याण इत्यादि। इसलिए किसी भी उघोग विकास के लिए उक्त पक्षों में संपूर्ण तालमेल का होना अत्यंत आवश्यक है। स्वाभाविक रुप से समाज में जब भी कोई प्रक्रिया धटित होती है तो उसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के परिणाम धटित होते हैं। औद्योगीकरण के भी दोनों प्रकार के प्रभाव परिलक्षित होते हैं। जिसके कुछ महत्वपूर्ण परिणाम हो सकते हैं। जैसे, नगरीय जनसंख्या में वृध्दि और ग्रमीण जनसंख्या में कमी, कृषि का यंत्रीकरण, प्राथमिक समूहों का विघटन, पारिवारिक स्वरुप में तेजी से परिवर्तन, मानसिक चिंताओं और बीमारियों की संख्या में वृद्धि इत्यादि। औद्योगीकरण के प्रभाव के परिप्रेक्ष्य में ही रोबर्ट हस्तपोस्टी और फ्रांसों सौरे (२००२) ने अपने शोध श्प्देजपजनजपवद ैजनतनबजनतमए प्दकनेजतपसप्रंजपवद ंदक ल्नतंस क्मअमसवचउमदजश में एक मुख्य ग्रामीण केंद्र और एक सफल औद्योगिकी जिला के शक्तिशाली निर्माण क्रियाविधि के परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण समाज में प्रादेशिक विकास प्रतिमान के समस्याओं के संदर्भ में सुरक्षित औद्योगिकीकरण को स्पष्ट किया। उक्त संपूर्ण परिणाम विभिन्न गाँवों में तब देखने को नहीं मिलता था जब गाँवों में ग्रामीण उद्योगों का वर्चस्व था जो कि ग्रमीणों के आर्थिकी का सशक्त माध्यम हुआ करता था और कहीं-कहीं अभी भी है। जैसे, प्दकनेजतपंस क्मअमसवचउमदज ैमतअपमे च्तपअंजम स्जकप् के श्ल्नतंस क्मअमसवचउमदज ंदक प्दकनेजतपंसप्रंजपवदश परिप्रेक्ष्य में अपने कुछ उदाहरण जैसे कर्नाटक में ५२ महिला मंडल से ४०००० लीटर दूध का संग्रहण गाँव में सुरक्षित पानी प्रदान करने की योजना इत्यादि स्वायत्त उद्योग को गाँव में विकास के कारक बनाया जा सकता है यह अध्ययन प्रदर्शित करता है कि गाँव में यदि बाह्य उद्योग नहीं तो ग्रामीण उद्योग भी उसके विकास का सूचक हो सकता है।

२. अध्ययन क्षेत्र एवं शोध में प्रयुक्त प्रविधिः-भिलाई इस्पात संयंत्र वर्तमान में भारत के सबसे बड़े इस्पात संयंत्र के रुप मे जाना जाता है। जिसके संदर्भ में गाँव वालों का कहना कि यह संयंत्र लगभग ५२-५३

गाँवों के जगह से मिलकर बना है। इस संयंत्र मे कर्मचारियों के आने-जाने के लिए ६ गेट है जो पर्याप्त दूरी पर स्थित है। प्रस्तुत अध्ययन भिलाई इस्पात संयंत्र, छत्तीसगढ़ के उन कर्मचारियों या कहा जा सकता है कि उन बालकों पर केंद्रित है जो भिन्न-भिन्न कारणों से अपनी शिक्षा अधुरी छोड़कर भिलाई इस्पात संयंत्र में काम करने के लिए जाते हैं। उक्त अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि वे बच्चे क्यों अपनी शिक्षा अधुरी छोड़कर भिलाई इस्पात संयंत्र में काम करने के लिए जा रहे हैं? क्या उन्हें कोई घरेलु समस्या है? या उन्हें माँ-बाप का दबाव है या कोई अन्य कारण इन बच्चों को प्रभावित कर रहा है। प्रस्तुत अध्ययन में निदर्शन एवं त्रिभुजन पद्धति व संबंधित तकनीकों का उपयोग किया गया है। निदर्शन के अंतर्गत उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा ग्राम-डुन्डेरा, जिला- दुर्ग जो कि भिलाई इस्पात संयंत्र से महज २-३ किमी. दूर हैं, के १७७ बच्चों या कर्मचारियों को लिया गया है। प्रस्तुत अध्ययन उन सभी बालकों पर जो १८ वर्ष से कम आयु से संयंत्र में काम कर रहे हैं, पर आधारित है जिन्हें प्रस्तुत अध्ययन के तालिकाओं में संयंत्र मे कार्यरत कर्मचारी की संज्ञा दी गई है। तथ्यों का संकलन त्रिभुजन पद्धति अतः संख्यात्मक पद्धति व गुणात्मक पद्धति दोनों प्रकार के पद्धतियों द्वारा किया गया है। जिसके अंर्तगत संरचित साक्षात्कार अनुसूची,.साक्षात्कार, अर्द्धसहभागी अवलोकन, केंद्रीय समूह वार्ता, . व्यैक्तिक अध्ययन और अर्न्तवस्तु विश्लेषण का उपयोग तथ्यों के संग्रहण के लिए किया गया है।

३.परिणामः

१. संयत्र के कार्यरत कर्मचारियों की आयु एवं शैक्षणिक स्थितिः

क्र.	कर्मचारियों की शैक्षणिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
१	निरक्षर	४३	२४.३
२	प्राथमिक कक्षा तक	५६	३१.६
३	माध्यमिक कक्षा तक	३३	१८.६
४	हाईस्कूल तक	१८	१०.२
५	हायर सेकेण्डरी तक	१३	७.३
६	तकनीकी शिक्षा	१२	६.८
७	व्यवसायिक शिक्षा	२	१.२
	योग	१७७	१००

क्र.	कर्मचारियों की आयु (वर्षों में)	आवृत्ति	प्रतिशत
१	१५-१६	३२	१८.१
२	१७-१८	४१	२३.२
३	१९-२०	३५	१९.८
४	२१-२२	३१	१७.५
५	२३-२४	३८	२१.४
	योग	१७७	१००

क्र.	कर्मचारियों की वर्तमान शैक्षणिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
१	जारी	१९	१०.८
२	समाप्त	१५८	८९.२
	योग	१७७	१००

आयु और उसके साथ शिक्षा का व्यक्ति के विकास के साथ गहरा संबंध होता है जो व्यक्ति जितना अधिक शिक्षित होता है वह उतनी ही ऊँची प्रतिष्ठा व सशक्त रोजगार प्राप्त करता है वहीं दूसरी ओर अशिक्षा या कम शिक्षा व्यक्ति के विकास में बाधा उत्पन्न करता है। अध्ययन में प्राप्त कुल १७७ कर्मचारियों में सर्वाधिक २३.२ प्रतिशत कर्मी १७-१८ वर्ष की आयु के हैं और द्वितीय क्रम में २१.४ प्रतिशत कर्मचारियों की आयु २३-२४ वर्ष है प्राप्त परिणाम में १८ प्रतिशत कर्मचारी १७ वर्ष से कम आयु के हैं। उक्त परिणाम दो गंभीर समस्या को दर्शित करते हैं पहला यह उक्त आयु बाल-श्रम के अंतर्गत आता है और दूसरा यह कि यदि भिलाई इस्पात संयंत्र के आसपास के केवल ३ गाँव में किए अध्ययन में १८ प्रतिशत बच्चे १७ वर्ष के कम आयु के हैं तो संपूर्ण संयंत्र के आसपास के गाँवों में यह समस्या काफी व्यापक रुप ले चुकी है। अध्ययन में लगभग ३२ प्रतिशत कर्मचारी केवल प्राथमिक कक्षा तक शिक्षा प्राप्त किए हैं जबकि २४.३ प्रतिशत कर्मचारी पूर्ण रुप से निरक्षर हैं। अध्ययन समूह के केवल ७.३ प्रतिशत कर्मी हायर सेकेण्ड्री और ६.८ प्रतिशत कर्मी तकनीकी शिक्षा तक शिक्षित हैं जो संयंत्र में कार्य करने के दृष्टिकोण से उपयोगी सिद्ध हो सकता है। उपरोक्त परिणाम से स्पष्ट है कि जो कर्मचारी निरक्षर या प्राथमिक कक्षा तक शिक्षित हैं वे संयत्र में निम्न आय स्तर संबंधी मजदूरी का कार्य कर सकते हैं। इतने अधिक कर्मियों का अशिक्षित या कम शिक्षित होना यह स्पष्ट संकेत करता है कि उन कर्मियों की स्थिति यथावत बने रह सकती है जो उन कर्मियों और उनके परिवार के भविष्य के लिए उचित नहीं क्योंकि इसका एक और गंभीर रुप यह है कि इन कर्मियों में से ८९.२ प्रतिशत कर्मी अपनी शिक्षा त्याग चुके हैं जबकि केवल १०.८ प्रतिशत बच्चे किसी न किसी रुप में अपनी शिक्षा जारी रखे हुए हैं परंतु दिनभर संयंत्र में कार्य करने के कारण वे अपनी शिक्षा में बिल्कुल ध्यान नहीं दे पाते।

२. संयत्र मे कार्यरत कर्मचारियों की रोजगार ग्रहण करने और शिक्षा त्यागने की आयुः

क्र.	कर्मचारियो के रोजगार ग्रहण करने की आयु (वर्ष में)	आवृत्ति	प्रतिशत	कर्मचारियो के शिक्षा त्यागने की आयु (वर्ष में)	आवृत्ति	प्रतिशत
१	१५	३९	२२	१५	३८	२१.५
२	१६	३८	२१.५	१६	३५	१९.८
३	१७	२९	१६.४	१७	३०	१६.९
४	१८	३१	१७.५	१८	२४	१३.५
५	१९	२५	१४.१	२०	२२	१२.४

६	२१	१५	८.५	२१	६	५.१
७	–	–	–	शिक्षा जारी	१६	१०.८
	योग	१७७	१००	योग	१७७	१००

सामान्य धारणा के रुप में औसतन एक व्यक्ति २४-२५ वर्ष तक की आयु तक अपनी शिक्षा पूर्ण करता है फिर रोजगार की तलाश करता है परंतु अध्ययन में प्राप्त परिणाम संयंत्र के नकारात्मक प्रभाव को दर्शित करती है क्योंकि साक्षात्कार के दौरान अधिकांश कर्मियों ने यह स्वीकार किया कि जैसे ही उन्हें पढ़ाई में मन नहीं लगता या वे फेल हो जाते हैं वैसे ही भिलाई इस्पात संयंत्र का गाँव के अधिक निकट होने के कारण वे पढ़ाई छोड़कर संयंत्र में कार्य करने चले जाते हैं जैसे, लगभग समान प्रतिशत (२२ प्रतिशत) कर्मचारियों ने महज १५ वर्ष और १६ वर्ष की आयु में अपनी शिक्षा त्याग दी है और वहीं दूसरी ओर क्रमशः २१.५ प्रतिशत और लगभग २० प्रतिशत कार्यरत कर्मचारियों के रोजगार ग्रहण करने की आयु भी १५ और १६ वर्ष पाया गया। इसी प्रकार अन्य तथ्यों की भी तुलना करने पर अधिकांश कार्यरत कर्मचारी अपने शिक्षा त्यागने के तुरंत बाद भिलाई इस्पात संयंत्र में रोजगार ग्रहण करते पाए गए हैं। परिणामतः स्पष्ट है कि संयंत्र बच्चों के शिक्षा छोड़ने का एक प्रबल कारक बनती जा रही है। जैसे, साक्षात्कार के दौरान ही इन कर्मचारियों का मानना है कि यदि गाँव के पास संयंत्र नहीं होता तो वे किसी भी प्रकार से अपनी शिक्षा जारी रखते।

३.संयंत्र में कार्यरत कर्मचारियों की निवासीय अवधि एवं प्रवासी कर्मचारीः

क्र.	प्रवासी कर्मचारी	आवृत्ति	प्रतिशत	क्र.	प्रवासी दुरी (किमी मे)	आवृत्ति	प्रतिशत
				१	२०-३०	१६	९
१	प्रवासी कर्मचारी	८९	५०.२	२	४०-५०	१८	१०.२
				३	६०-७०	३४	१९.२
				४	७०-१००	२१	११.८
२	ग्रामीण कर्मचारी	८८	४९.८	५	मूल निवासी	८८	४९.८
	योग	१७७	१००		योग	४०	१००

अध्ययन समूह मे अधिकांश ४९.८ प्रतिशत कर्मचारी गाँव के मूल निवासी हैं जबकि ५०.२ प्रतिशत कर्मचारी प्रवासी है जिसमे १ से लेकर ८ वर्ष तक के निवासरत अवधि वाले कर्मचारी मिले हैं। अतः जो ४९.८ प्रतिशत मूल निवासी है उनमें संयंत्र संबंधी क्रियाकलापों जैसे मित्रों का संयंत्र जाना, माता-पिता का संयंत्र जाना, इत्यादि का प्रभाव बच्चों में अधिक पड़ा है। संयंत्र कमचारियों के प्रवासी दूरी का अध्ययन करने पर सर्वाधिक १९.२ प्रतिशत कर्मचारी ४०-५० कि.मी. की दूरी तय करके आए है जबकि अध्ययन

में अधिकतम १०० कि.मी. तक के प्रवासी मजदूर भी पाए गए। उत्पादन के लिए रोजगार प्रदान करना सभी संयंत्र की आवश्यकता होती है जिससे संयंत्र के आसपास के गाँवों मे रोजगार का एक विकल्प भी खुलता है परंतु बच्चों के सोच पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव पर ध्यान देना भी आवश्यक है।

४. संयंत्र में कार्यरत कर्मचरियों के परिवार में सदस्यों की संख्या, कर्मचारियों के माता-पिता की शैक्षणिक स्थिति एवं कर्मचारियों के मासिक आयः

क्र.	माता-पिता की शैक्षणिक स्थिति	माता		पिता		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
१	निरक्षर	९३	५२.५	८१	४५.८	१७४	४९.२
२	प्राथमिक कक्षा	४३	२४.३	२८	१५.८	७१	२०.०
३	माध्यमिक कक्षा	२४	१३.५	२८	१५.८	५२	१४.७
४	हाईस्कूल	१२	६.८	१५	८.५	२७	७.६
५	हायरसेकेण्डरी	५	२.९	१९	१०.७	२४	६.८
६	तकनीकी शिक्षा	–	–	२	१.१	२	०.६
७	व्यवसायिक शिक्षा	–	–	४	२.३	४	१.१
	योग	१७७	१००	१७७	१००	३५४	१००

क्र.	संयंत्र मे कार्य की स्थिति	माता		पिता	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
१	संयंत्र मे कार्यरत	९८	५५.४	१४३	८०.८
२	संयंत्र मे अकार्यरत	७९	४४.६	३४	१९.२
	योग	१७७	१००	१७७	१००

क्र.	सदस्यों की संख्या	आवृत्ति	प्रतिशत
१	२-३	७७	४३.५
२	४-५	३८	२१.४
३	६-७	२९	१६.४
४	८-९	३३	१८.७
	योग	१७७	१००

क्र.	मासिक आय	आवृत्ति	प्रतिशत
१	३०००-४०००	२३	१३
२	४१००-५०००	५५	३१.१
३	५१००-६०००	५३	२९.९
४	६१००-७०००	२३	१३
५	७१००-८०००	१२	६.८
६	८१००-१००००	११	६.२
	योग	१७७	१००

यदि परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक हो और कमाने वाला एक तो परिवार में आर्थिकी व संबंधित समस्या का होना स्वाभाविक है। संबंधित अध्ययन में संयुक्त रुप से ३५.२ प्रतिशत कर्मचारियों के परिवार में सदस्यों की संख्या ६ से ९ तक की है वहीं २१.४ प्रतिशत कर्मचारियों के परिवार मे सदस्यों के संख्या

४ व ५ तक की है। संभवतः एक बड़े प्रतिशत मे कर्मचारियों के परिवार मे सदस्यों की संख्या अधिक है अतः धर में अधिक जनसंख्या का होना अध्ययन-क्षेत्र के बच्चों के द्वारा शिक्षा त्यागकर संयंत्र में कार्य करने के प्रभावी कारक के रुप में सामने आया है। अध्ययन समूह के कुल कर्मचारियों में ४५.८ प्रतिशत कर्मचारियों के पिता एवं ५२.५ प्रतिशत कर्मचारियों के माता निरक्षर है और इसी प्रकार एक बड़े प्रतिशत में १५.८ प्रतिशत कर्मचारियों के पिता एवं २४.३ प्रतिशत कर्मचारियों के माता केवल प्राथमिक कक्षा तक शिक्षित है। अतः निश्चित रुप से माता-पिता की अशिक्षा या कम शिक्षित होना उन बालकों को उनमें शिक्षा के महत्व को न समझा पाने के प्रभावी कारक के रुप में सामने आया है। अध्ययन समूह के ५५.४ प्रतिशत कर्मचारियों के माता एवं ८०.८ प्रतिशत कर्मचारियों के पिता भिलाई इस्पात संयंत्र मे काम करतें हैं जो यह दर्शाता है कि निश्चित रुप से वे अपने बच्चों को संयंत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित करते होगें जैसा कि क्षेत्रकार्य के दौरान अनेक परिवारों में देखने को भी मिला। अध्ययन समूह में किए गए आर्थिकी संबंधित अध्ययन एक आसमंजस्यता की स्थिति उत्पन्न कर देती है कि अध्ययन समूह के लगभग सभी बच्चों या कर्मचारियो की मासिक आय इतनी कम है कि इस मंहगाई के दौर में उनका गुजारा असंभव है जैसे संयुक्त रुप से ६१ प्रतिशत कर्मचारियों की मासिक आय ४१०० से ६००० तक है। संभवतः इसका कारण उन कर्मचारियों के काम का स्वरुप हो सकता है क्योंकि अधिकांश कर्मचारियों का काम का स्वरुप मजदूरी है। अतः यदि इतने वेतन में कर्मचारियों के कार्यरत रहने पर उनके परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति नही हो सकती संभवतः उनके बच्चें फिर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपने माता-पिता के इतिहास को दोहराएगें।

५.कार्यरत कर्मचरियों के संयंत्र में कार्य करने की अवधि एवं संयंत्र में जाने का कारणः

क्र.	कर्मचारियों के अनुसार संयंत्र जाने का कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
१	स्वंय की इच्छा से	३१	१७.५
२	माता-पिता के कहने पर	४१	२३.२
३	मित्रों के प्रभाव से	७७	४३.५
४	सिनेमा/ टीवी इत्यादि के प्रभाव से	१२	६.८
५	धरेलु समस्या के कारण	१६	९.०
	योग	१७७	१००

संयंत्र में कर्मियों की कार्य करने की अवधि का अध्ययन करने पर अधिकांश ३१.६ प्रतिशत कर्मचारी संयंत्र में लगभग ५ वर्ष से कार्यरत हैं जबकि द्वितीय क्रम में १४.७ प्रतिशत कर्मचारी ४ वर्ष से कार्यरत हैं जो यह दर्शित करता है कि संयंत्र के कर्मचारी लम्बे समय से संयंत्र में कार्यरत हैं परंतु गंभीरता इस

बात से है कि उक्त सभी प्रकार के कर्मियों का कार्य मजदूर वर्ग के हैं जिससे इन कार्यों पर कर्मियों का पूरा भविष्य कायम नहीं हो सकता। साथ ही विभिन्न कर्मियों के शिक्षा त्यागकर संयंत्र में जाने के कारण का अध्ययन करने पर सर्वाधिक ४३.५ प्रतिशत कर्मियों ने मित्रों के प्रभाव अतः अपने मित्रों के संयत्र में जाने कारण शिक्षा त्यागकर संयंत्र जाना माना जबकि द्वितीय क्रम में २३.२ प्रतिशत कर्मियों ने अपने माता-पिता के जिद के कारण संयंत्र में जाना स्वीकारा जो काफी निराशाजनक परिणाम है। १७.५ प्रतिशत कर्मियों ने स्वयं की इच्छा से संयंत्र जाने को स्वीकारा। अतः प्राप्त परिणाम के अनुसार मित्रों का शिक्षा छोड़ना या उनका पैसा कमाना, अन्य बच्चों के मन में परिवर्तन एक प्रभावी कारण है जिसपर माता-पिता का उचित नियंत्रण आवश्यक है।

६.संयंत्र में कार्यरत कर्मचरियों में पूर्व तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर्मचारी, काम का स्वरुप व उनकी भविष्य के प्रति सोचः

क्र.	पूर्व तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर्मचारी	आवृत्ति	प्रतिशत
१	प्रशिक्षित कर्मचारी	२१	११.९
२	अप्रशिक्षित कर्मचारी	१५६	८८.१
	योग	१७७	१००

क्र.	कर्मचारियों के काम के स्वरुप	आवृत्ति	प्रतिशत
१	मजदुरी	१२०	६७.८
२	पर्यवेक्षक	९	५.१
३	तकनीकी कार्य	११	६.२
४	वाहन चालक	२३	१३
५	वेल्डर	१४	७.९
	योग	१७७	१००

चाहे वह कोई भी संयंत्र हो तथा संयंत्र के अंदर किसी भी प्रकार का कार्य हो वहाँ सुरक्षा व तकनीकी ज्ञान अत्यंत आवश्यक होता है परंतु संबंधित परिणाम अंत्यंत ही निराशाजनक प्राप्त हुआ क्योंकि अध्ययन समूह के कुल कर्मचारियों में केवल ११.९ प्रतिशत कर्मचारियों ने ही तकनीकी शिक्षा प्राप्त किया है जबकि ८८.१ प्रतिशत कर्मचारी न तो पूर्व तकनीकी शिक्षा प्राप्त हैं और न ही संयंत्र में कार्य करने के लिए कोई सुरक्षात्मक प्रशिक्षण लिए हैं जो संयंत्र में कार्य करने के दृष्टिकोण से काफी संवेदनशील है। संयंत्र में कर्मचारियों के कार्य स्वरुप का अध्ययन करने पर लगभग ६८ प्रतिशत कर्मचारियों के काम मजदूरी के हैं जो कि असंगठित प्रकृति के हैं जिनमें संगठित मजदूरी के अपेक्षाकृत मजदूरों के शोषण होने की संभावना अधिक होती है इसके साथ ही इन मजदूरों के भविष्य में भी विकसित होने की संभावना कम होती है। अध्ययन में केवल ६.२ प्रतिशत कर्मचारी तकनीकी व ७.९ प्रतिशत कर्मचारी वेल्डर के कार्य में संलग्न पाए गए जिनका भविष्य में अपेक्षाकृत विकसित होने की संभावना है क्योंकि वाहन चालक, वेल्डर या

अन्य तकनीकी कार्य में संलग्न कर्मचारियों के भविष्य में प्रशिक्षित होकर पदोन्नति की संभावना बनी रहती है। साथ ही अध्ययन समूह के केवल १२ प्रतिशत कर्मी ही संयंत्र के कार्यों में प्रशिक्षत हैं जबकि ८८ प्रतिशत कर्मी अप्रशिक्षित हैं जिनके भविष्य में पदोन्नति होने की संभावना बहुत ही कम है साथ ही अप्रशि़क्षित कर्मियों के साथ दुर्धटना घटने की संभावना भी अधिक होती है। प्रस्तुत परिणाम में उन बच्चों का जो अपनी शिक्षा को अधुरे में छोड़कर गए हैं, के भविष्य के परिप्रेक्ष्य में सकारात्मक परिणाम के रुप में १८.१ प्रतिशत बच्चे पुनः संयंत्र में काम छोड़कर अपनी शिक्षा प्रारंभ करना चाहते हैं जबकि सर्वाधिक ७२.३ प्रतिशत कार्यकारी कर्मचारी और बच्चे चाहे वे संयंत्र में किसी भी प्रकार के कार्य कर रहे हो उसी को अपना भाविष्य मानते हैं जबकि कुछ कार्यरत बच्चे या कर्मचारी संयत्र में कुछ दिन काम करने के बाद एक पर्याप्त प्रशिक्षण लेकर अन्य संयंत्र में काम करने की इच्छा रखते हैं।

७.संयंत्र में कार्यरत कर्मचरियों को कार्य प्रकार एवं प्राप्त सुविधाएँः

क्र.	संयंत्र में कर्मचारियों को प्रदान की जाने वाली सुविधा	सुविधाएँ उपलब्ध		सुविधाएँ नहीं		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
१	बीमा	१७७	१००	०	०	१७७	१००
२	बैंक/एटीएम	१२३	७०	५४	३०	१७७	१००
३	मेडिकल सुविधा	१६७	१००	१०	०	१७७	१००
४	शिक्षा संबंधी सुविधा	०	०	१७७	१००	१७७	१००
५	भविष्य संबंधी योजनाएँ	४६	७०	१३१	३०	१७७	१००
६	परिवार नियोजन	०	०	१७७	१००	१७७	१००
७	सोडेक्सो पास	६३	७०	१४४	३०	१७७	१००

संयंत्र द्वारा संयंत्र के कर्मचारियों को प्रदान की जाने वाली विभिन्न सुविधाओं का अध्ययन करने पर कर्मियों को बीमा सुविधा, एटीएम सुविधा, मेडिकल सुविधा के संबंध में सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुआ पर कर्मियों को अतिरिक्त तकनीकी शिक्षा, परिवार नियोजन संबंधी सुविधाओं का पूर्ण अभाव है। वहीं संयंत्र के कर्मचारियों को कुछ अतिरिक्त सुविधाएँ जैसे, सोडेक्सो पास (सोडेक्सो पास एक ऐसा कार्ड होता हे जिसमें १००० रूपये तक सामान कर्मचारी कुछ निर्धारित दुकानों से खरीद सकता है)। कुछ भविष्य संबंधी बीमा इत्यादि की सुविधा संयंत्र में प्रदान की जाती है। परंतु संख्यात्मक रुप से प्राप्त इस परिणाम का अन्य पहलू गुणात्मक परिणाम के रुप में प्राप्त हुआ जैसे सोडक्सो पास के वितरण में अनियमितता, संयंत्र में सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से भारी कमी, इत्यादि। किसी भी संयंत्र में सुरक्षा को पहली प्राथमिकता

देनी होती है परंतु इस संदर्भ में भिलाई इस्पात संयंत्र में भारी कमी देखने को मिली जिसका एक ज्वलंत उदाहरण जून, २०१४ में संयंत्र के ब्लास्ट फार्नेस विभाग में हुए गैस रिसाव और अनेक कर्मचारियों के मृत्यु का होना है। इस गैस रिवास का कारण गैस के पाइप लाइनों का अत्यधिक कमजोर व पुराना होना बताया गया। इस प्रकार की अनेक घटनाएँ संस्था में होते रहती हैं। सुरक्षा की दृष्टि से इस संयंत्र की नाकामी का कारण यहाँ के ठेकेदारी की लापरवाही है जैसे, संयंत्र के प्रक्रिया के अनुसार यहाँ के मजदूरों को कार्य पर रखने के पहले सुरक्षा (सेफ्टी) प्रशिक्षण देना होता है जो अत्यंत आवश्यक है पर साक्षात्कार के दौरान कर्मियों ने बताया कि केवल खानापूर्ति के लिए सुरक्षा (सेफ्टी) प्रशिक्षण दिया जाता है या तो ठेकादारों द्वारा कभी-कभी ५०-१०० रु. मजदूरों से लेकर भी बिना सुरक्षा (सेफ्टी) प्रशिक्षण के मजदूरों को काम पर रख लिया जाता है। इसके साथ ही संयंत्र कर्मियों को दस्ताने, जूते, हेलमेट इत्यादि सामग्री भी मुहैया नहीं कराई जाती है। श्रमिकों में पाए जाने वाला असंतोष संयंत्र में विरोध का कारण बनता है। जैसे, पारसंस (२००२) महोदय ने मार्क्सवादी औद्योगीकरण स्तरीकरण के सिंद्धांत का दो आधारों पर खंडन किया- अभिजातीय बहुवाद का सिद्धांत एवं मध्यम वर्ग वृद्धि। श्रामिक वर्ग में चूंकि मध्यम वर्ग की वृद्धि हो रही है और श्रमिक वर्ग में कमी होती जा रही है इसलिए पूंजीवादी समाज में दो परस्पर विरोधी वर्गों के संघर्ष की अनिवार्य स्थिति लगभग खत्म सी हो गई है। पारसंस का उपरोक्त मत ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांशतः देखने मिल सकता हैं क्योंकि आर्थिक व्यवस्था इत्यादि में ग्रामीण जीवन ही संक्रमण स्थिति में होता है जिसपर औद्योगिकीकरण का प्रभाव पड़ रहा है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

१ अध्ययन क्षेत्र के रुप में चुने गए गाँव के अधिकांश बच्चे अपनी शिक्षा को मध्य में ही त्यागकर जल्द से जल्द पैसा कमाने के चाह में काम करने की और अग्रसर हो रहे हैं। बच्चों को अपने इस निर्णय में उनके माता-पिता का समर्थन प्राप्त है। जैसे, माता-पिता द्वारा बच्चों के शिक्षा के छुटते ही उन बच्चों के शिक्षा को आगे न बढ़ाकर उन्हें संयंत्र में भेज देना।

२ ठेकेदारों द्वारा किसी भी आयु के बच्चों या लोगों को गेटपास प्रदान कर उनसे मजदूरी लेना भी बच्चों के संयंत्र जाने का सहायक कारक है। साथ ही ठेकेदारों द्वारा शोषण प्रत्यक्ष रुप से सामने आया है।

३ हालांकि अपनी शिक्षा को अधुरा छोड़कर संयंत्र में काम करने के लिए बच्चों का जाना उनके भविष्य व सुरक्षा के लिए घातक है परंतु कई कारणों से शिक्षा के छूट जाने के बाद बच्चे अपराधिक या अनैतिक मार्ग पर चल पड़ते हैं, अतः इस प्रकार के प्रक्रिया को रोकने में संयंत्र सहायक हैं यदि आयु को ध्यान में रखकर बच्चों को रोजगार प्रदान किया जाए तो संयंत्र उन बच्चों और गाँव के विकास में सहायक होगा।

४ संयंत्रों का स्वास्थ पर प्रभाव स्वाभविक है परंतु ग्राम-डुंडेरा व आसपास के गाँव में स्वास्थ को महत्व देते हुए नर्सरी की व्यवस्था कर अधिक से अधिक वृक्ष या पेंड़ पौधे लगाना लाभकारी सिद्ध हुआ है।

५ अध्ययन ग्राम में नगरीकरण के प्रसार का एक मात्र कारण भिलाई इस्पात संयंत्र रहा है।

६ चाहे वह किसी काम के लिए हो पर शिक्षा को अधुरी छोड़ना या अपूर्ण शिक्षा शहरी, ग्रामीण किसी भी क्षेत्र के बच्चों के लिए सकारात्मक नहीं होता है। जिस प्रकार परिणाम प्राप्त हुआ उसमें गाँव के स्कुलों के शिक्षकों को, बच्चों के माता-पिता को बच्चों की शिक्षा पर पर्याप्त ध्यान देकर उनके स्कूल छोड़ने या शिक्षा त्यागने के कारण को जानकर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ सूचीः

बघेल,डी.एस. २००७ *"नगरीय समाजशास्त्र"* मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी मध्यप्रदेश

बघेल, डी. एस. २००६ *"औद्योगिक सामाजशास्त्र"* विवेक प्रकाशन, दिल्ली-७

हसनैन, नदीम २००६ *" समकालीन भारतीय समाज"* भारत बुक सेंटर, लखनऊ

ठतनदमसपए भ्नहवण ंदक वजीमतए२००७ श्प्दकनेजतपंसप्रंजपवद वि त्मेमंतबी ज्वसेश प्छत्प त्ठ। ब्मदजमत ंदक म्डछएथ्तंदबमण

म्चवेजप त्ण ंदक ैवजजम थ्तंदबवए २००२ श्प्देजपजनजपवदंस ैजतनबजनतमए प्दकनेजतपंसप्रंजपवंदक त्नतंस क्मअमसवचउमदजरू ।द म्अवसनजपवदंतल प्दजमतचतमजंजपवद वि जीम प्जंसपंद म्गचमतपमदबमश ळतवूजी ंदक बैंदहमए टवसण३३ऐप्नम.१ए चंहम.३रू४१एूपदजमत २००२ण

ॅसजवदएश्रीवदण १६८७ श्जैमवतल ंदक त्मेमंतबी वद प्दकनेजतपंसप्रंजपवदश ।ददनंस त्पअपमू वि ैवबपवसवहलण टवस.१३रू८६.१०८ण क्वसरू१०.११४६ध्ंददनतमअण्वण१३ ०८०१८७ण०००५१३ण

प्दकनेजतपंस क्मअमसवचउमदज ैमतअपबमे च्तपअंजम स्उजण.श्त्नतंस क्मअसवचउमदज ंदक प्दकनेजतपंसप्रंजपवदश

ठीपसंप ैजममस च्संदजण